गंगा की पुकार

गंगा की पुकार

भूमिका

यह पुस्तिका "गंगा की पुकार" बच्चों के लिए तैयार की गई है, जिसमें जानवरों, प्रकृति और प्रदूषण से जुड़ी कविताएँ शामिल हैं। इन कविताओं के जरिए आप हाथी, जंगल, पहाड़ और नदियों जैसे विषयों की जानकारी बच्चों तक सरल और रोचक तरीके से पहुँचा सकते हैं। जानवरों के जरिए हम यह संदेश देना चाहते हैं कि हमारी जैवविविधता ही हमारे भविष्य की सबसे बड़ी पूँजी है। यदि हम सब मिलकर इसे संजो कर रखे तो धरती आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित और सुंदर रह पाएगी।

परियोजना अन्वेषक

डॉ. रूचि बडोला, डीन, एफ.डब्ल्यू.एस.
डॉ. सैयद ऐनुल हुसैन, विषय वस्तु विशेषज्ञ

टीम लीडर

डॉ. संगीता अंगोम, परियोजना वैज्ञानिक एवं प्रशिक्षण समन्वयक

लेखिका

अंजली कठैत, डॉ. संध्या जोशी, सुनीता रावत

संपादकीय सहयोग

निधि सिंह, कुमारी बबली, पीयूष पाण्डेय, नीरज असवाल, आरती चौहान

पाठ संकलन

दानिश कलीम, अंशुल भावसार

संपादकीय विन्यास

राहुल गुप्ता, सिमरन अग्रवाल, अलंकृता शर्मा, रोहित कुमार, अश्मिका अग्रवाल, अजय कुमार मौर्या

डिज़ाइन, लेआउट और इलस्ट्रेशन

कुमारी बबली

उद्धरण

डब्लू.आई.आई. जीएसीएमसी (2026), गंगा की पुकार। गंगा जलीय जीव संरक्षण अनुश्रवण केन्द्र, भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून, भारत

आईएसबीएन

978-93-49520-00-4

भारतीय वन्यजीव संस्थान

भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यू.आई.आई.) की स्थापना साल 1982 में हुई थी। यह संस्थान पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन कार्य करता है। इसका मुख्य उद्देश्य जंगली जानवरों और जंगलों की सुरक्षा के बारे में शोध करना और प्रशिक्षण देना है। संस्थान केंद्र और राज्य सरकारों को भी तकनीकी मदद और सलाह देता है ताकि देश में वन्यजीव संरक्षण बेहतर तरीके से हो सके। इससे प्रशिक्षित कर्मचारी एवं अधिकारी भारत मे वन्यजीवों के अध्ययन और संरक्षण मे अपना विशेष योगदान दे रहे है।

© Kumari Babli

विषय सूची

गंगा गीत 1 3

गंगा गीत 2 5

मेढ़क की बरसाती बात 9

डॉल्फिन की जुबानी, नदी की कहानी 13

मछली बोली, साफ रखो पानी! 17

मधुर गीतों का सफर 21

मगरमच्छ की कहानी 25

धीमी चाल गहरी समझ 29

दुःखी घड़ियाल की कहानी 33

गंगा मैया की पुकार 37

सारस-प्रेम और प्रकृति का संदेश 41

प्रकृति का दर्द 45

नदी का नन्हा रक्षक 49

साँप- भ्रम, भय और सच्चाई 53

जंगल का राजा शेर 57

प्रकृति का साथी हाथी 61

रंग बिरंगा मोर 65

जीवन के साथी पेड़ 69

बाल गंगा प्रहरी 73

प्रमाण पत्र 77

गंगा- जीवन का आधार 79

गंगा की पुत्री डॉल्फिन की आत्मकथा 82

गंगा गीत

তুহিন সামন্ত
© pexels

गंगा गीत 1

नमामि गंगे नमामि गंगे, नमामि गंगे नमामि गंगे।

तुम्हारी कृपा से जी रहे हैं,

हर एक तन में तुम्हारा जल है।

तुम्हीं तो जीवन बना रही हो,

तुम्हीं से कल था, तुम्हीं से कल है।

कहीं पे मछली कहीं मगरमच्छ ,

कहीं पे मेंढक उछल रहे हैं।

हजारों लाखों करोड़ों जीवन,

तुम्हारी गोदी में पल रहे हैं।

जटा से शिव की हुई प्रवाहित

लहर लहर सी लहर गई हैं

असंख्य नाले असंख्य नहरें,

~ सूबे सिंह सुजान
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय हथीरा, कुरुक्षेत्र,
हरियाणा बाल गंगा प्रहरी स्कूल

OMKARANANDA PUBLIC SCHOOL
© pexels

गंगा गीत 2

गंगा जैव विविधता गीत

नमो गंगे तरंगेपाप हारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

पतित पावन सदा नीरा है प्यारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

जीवन दायिनी है, जग की तारणहारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

सुर सरिता तुम्हीं देवों की हो प्यारी, मानव भी करें पूजा तुम्हारी।

नमो गंगे तरंगे पाप हारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

सदियो से धरा को तूने है सींचा, तेरे दम पे हरा हो हर बगीचा।

है मानव की जिंदगी तूने संवारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

नमो गंगे तरंगे पाप हारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

कई जीवों की तू है जन्म दाता, तेरी कृपा से वो जीवन है पाता।

कई जीवन तेरी ही कोख से जन्में, मत्स्यावतार को जन्मा है तुम्ही ने।

देवनदी तू सुरधुनी है तू प्यारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

नमो गंगे तरंगे पाप हारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

स्वर्ग से उतर धरा पर तू है आई, हिमालय की छवि तूने बढ़ाई।

कूर्मावतार को जन्मा तुम्हीं ने, वनस्पति को भी पनपाया तुम्हीं ने।

हे सुरसरिता मगर की तू करें सवारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

नमो गंगे तरंगे पाप हारी, सदा जय हो सदा जय हो तुम्हारी।

नमस्तेजान्हवी नमस्तेहे! त्रिपथगा,

नमस्तेहे! नमोस्तुतेहे! नमोनमः।

~ डा. संध्या जोशी

कविताएं और नारे

अण्डा
डिंभकीट
मेंढ़क

1. मेंढक की बरसाती बात

मेंढक की सुरक्षा के लिए कदम उठाओ,
नदियों को दूषित होने से बचााओ।

बरसात आयी मेंढक बोला टर्र-टर्र,
बारिश की बूंदे बरसती जैसे झर्र-झर्र।
उछल उछल कर दौड़ लगाता,
बरसात का मौसम खूब मुझे भाता।
तालाब, नदी सब मुझे है प्यारी,
वहीं है मेरी दुनिया सारी।
आती है सर्दी लगता है मुझे डर,
फिर छुप जाता हूं मै बिल के अन्दर।
पानी में खूब कीड़े मैं खाता,
जल को दूषित होने से बचाता।
प्रकृति का सन्देश सुनाता,
स्वच्छ रहे जल यही समझाता।

1. मेंढक पानी और जमीन दोनों जगह पाए जाते हैं।
2. इसके पीछे के पैर आगे की तुलना में अधिक लम्बे होते हैं।

© WII-NMCG

3. ये कीड़े-मकोड़े, मक्खियाँ और छोटे जीव खाते हैं।

4. इसका रंग आमतौर पर हरा या भूरा होता है, जो इसे घास या मिट्टी में छिपने में मदद करता है।

2. डॉल्फिन की जुबानी, नदी की कहानी

हमने यही ठाना है,
डॉल्फिन को बचाना है।

गंगा की शान है डॉल्फिन रानी,
स्वच्छ जल है मेरी कहानी।
देती हूँ नदियों में शुद्धता की खबर,
स्वस्थ है जल या है उसमें जहर।
छोटी मछलियों का करती शिकार,
यही है मेरा प्रिय भोजन और आहार।
जीवन की डोर हो गयी है कमजोर,
प्रदूषित हो रही है नदियां हर रोज।
अब खत्म होता जा रहा है मेरा घर,
प्लास्टिक, केमिकल ढा रहे हैं कहर।
स्वच्छता अभियान में कदम बढ़ायें,
प्रकृति के अनमोल रत्न को बचाएँ।

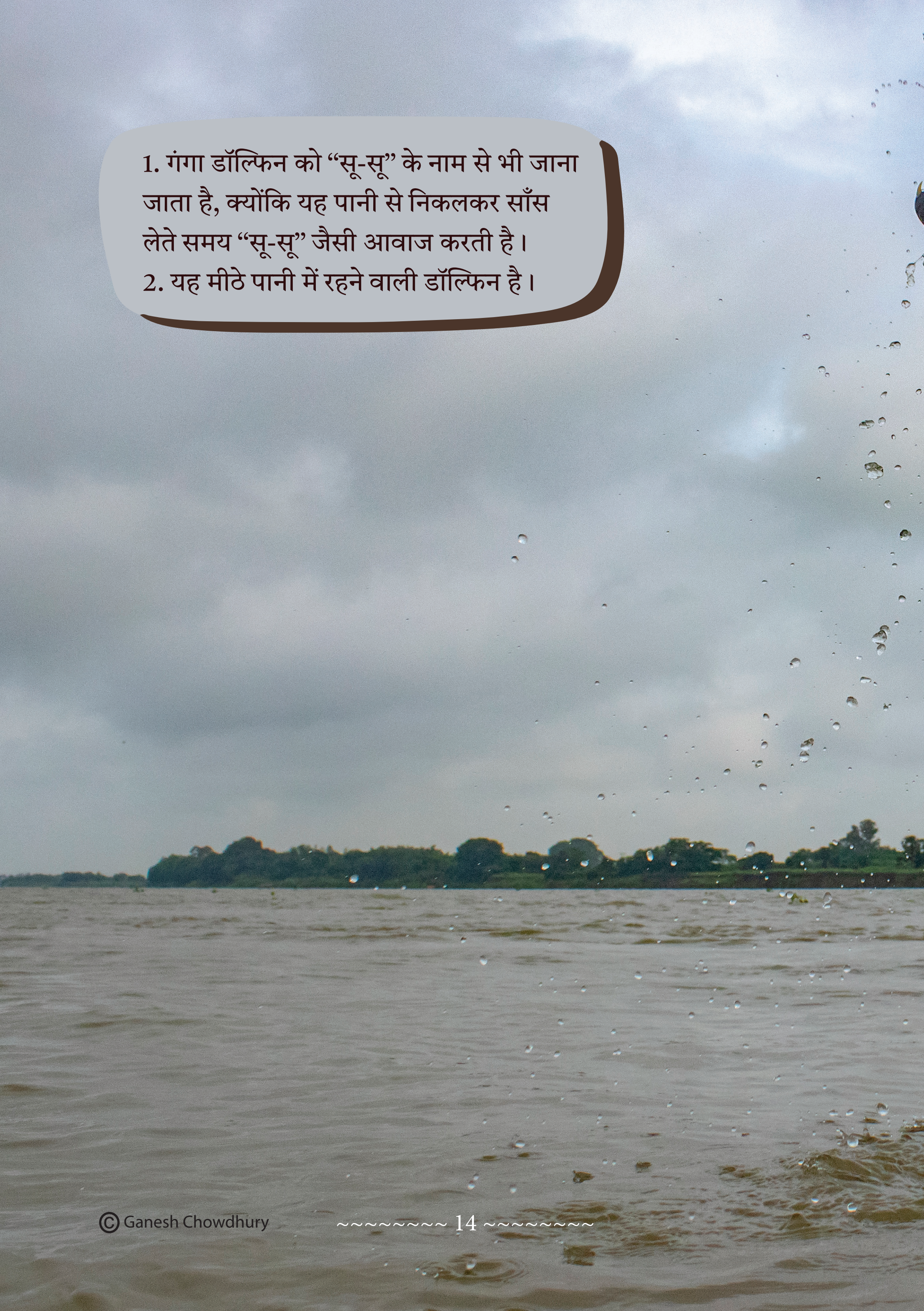

1. गंगा डॉल्फिन को “सू-सू” के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यह पानी से निकलकर साँस लेते समय “सू-सू” जैसी आवाज करती है।
2. यह मीठे पानी में रहने वाली डॉल्फिन है।

3. डॉल्फिन देख नहीं सकती, लेकिन वह ध्वनि तरंगों की मदद से रास्ता और अपना भोजन ढूँढ लेती है।

4. यह भारत का राष्ट्रीय जलीय जीव भी है।

3. मछली बोली- साफ रखो पानी!

जल को ना गंदा करो,
प्रकृति को ना यूं शर्मिंदा करो।

मछली जल की रानी है,
पानी ही उसकी कहानी है।
पानी में कीट-पतंगो को खाती,
फिर उछल-उछल के खूब इतराती।
मत्स्य अवतार बन विष्णु जी आए,
धरती को प्रलय होने से बचाए।
साफ जल में वह मुस्कुराए,
गंदा पानी खूब उसे सताए।
नदियां हो स्वच्छ, झीलें हो निराली,
तभी बचेगी जल की यह रखवाली।
न डालो कूड़ा नदी में न करो मनमानी,
साफ ना रहा पानी तो ना रहेगी मछली रानी।

1. मछली पानी में रहने वाला जीव है।
2.मछलियाँ अपने गलफड़ों से साँस लेती हैं।

© Rahul Rana

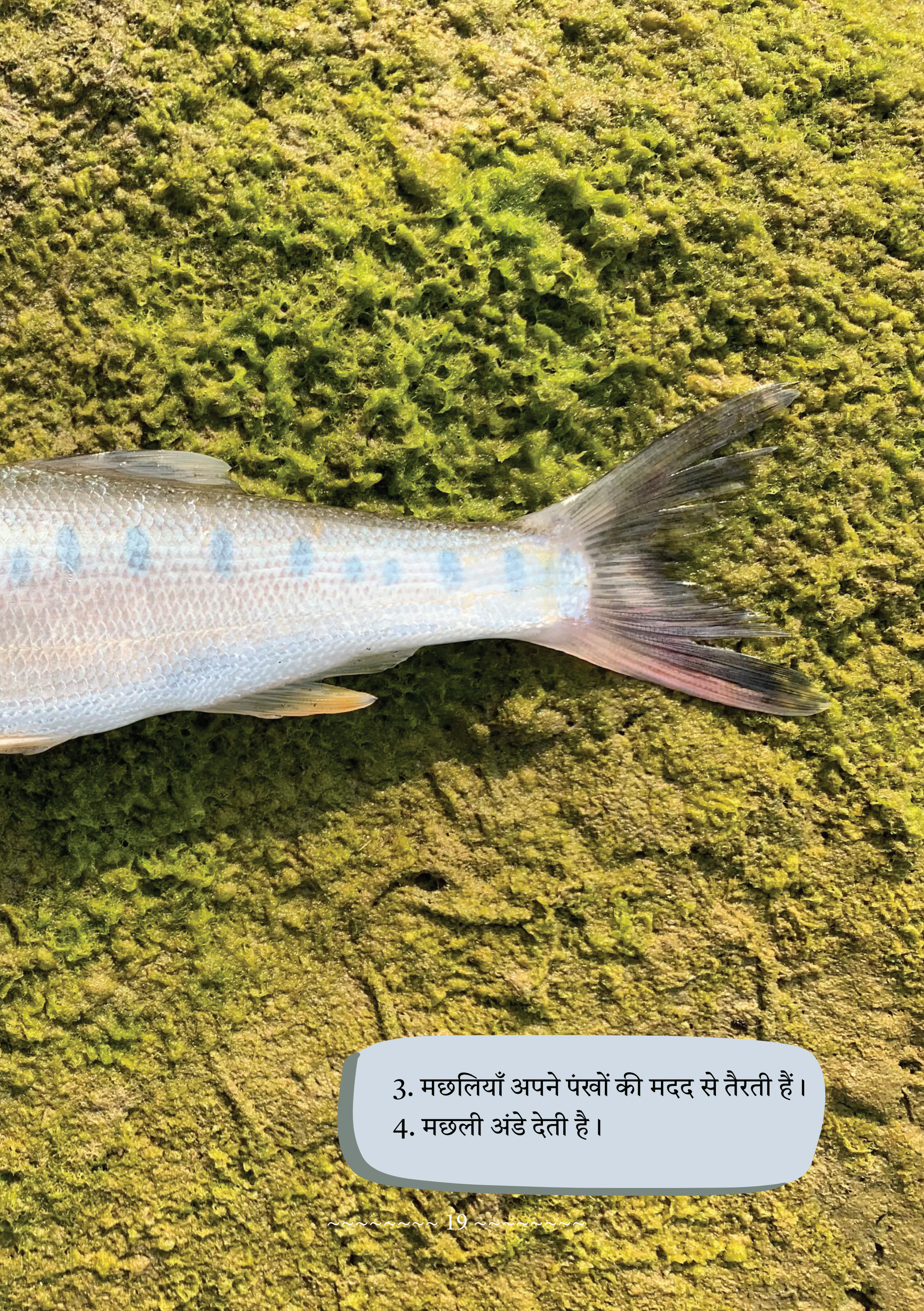

3. मछलियाँ अपने पंखों की मदद से तैरती हैं।
4. मछली अंडे देती है।

4. मधुर गीतों का सफर

पेड़ों की कटाई से छिन रहा है घर,
बचा लो हमें कहीं खो ना जाये सुन्दर सफर।

सूरज की किरण के साथ आते,
चहक-चहक कर सबको जगाते।
मधुर-मधुर गीत सुनाकर,
सबके मन को हैं ये भाते।
कीट-पतंगो को खाकर मिटाते,
खेतों को नुकसान होने से बचाते।
बीजों को दूर-दूर ले जाते,
नए पौधों को जीवन दिलाते।
फूलों का करते परागण का काम,
प्रकृति को देते सुंदरता का नाम।
कटते पेड़, और घटते घर,
पक्षी भी हो गए अब बेघर।

1. पक्षी जंगल, नदी, झील, रेगिस्तान और पहाड़ जैसे आवासों में रहते हैं।
2. इनके पास दाँत नहीं होते, चोंच होती है।

© Vipul

3. यह बीज फैलाने और परागण में सहायक होते हैं।

4. इनके पंख और हल्की हड्डियाँ इन्हें उड़ने में मदद करती हैं।

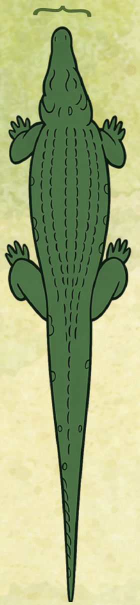
चैड़ा थूथन
(V-आकार का)

5. मगरमच्छ की कहानी

हर जीव का है अपना स्थान ,
मगरमच्छ को भी दो सम्मान।

एक कहानी बड़ी पुरानी,
बहता जल खारा पानी।
रंग है मेरा गहरा हरा,
बच के रहना मुझसे जरा।
पीठ में मेरे है नुकीले कवच,
खतरे से मैं हो जाता सजग।
जबड़े मेरे हैं लोहे जैसे,
पकड़ से मेरी छूटोगे कैसे।
नदी सूखी, पेड़ कटे हजार,
मैं भी हूं संकट का शिकार।
संरक्षण का उठाओ बीड़ा,
इन प्रहरी को मत दो पीड़ा।

1. मगर का शरीर लंबा, मोटा और पूंछ मजबूत होती है।
2.आंखें और नाक ऊपर की ओर होती है, जिससे यह पानी में आधा डूबा रहकर भी शिकार देख सकता है।

3. इसका रंग भूरा या हरा होता है, जिससे यह पानी में आसानी से दिखाई नहीं देता।
4. मगर दिन में अक्सर धूप सेकने पानी से बाहर आता है।

अंडा

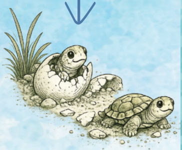

शिशु

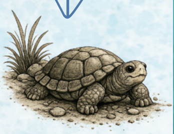

किशोर

6. धीमी चाल, गहरी समझ

प्लास्टिक को जड़ से हटाओ,
कछुओं की संख्या बढ़ाओ।

कछुआ राजा कछुआ राजा,
मिट्टी पानी दोनों मुझे भाता।
चाल है मेरी धीमी-धीमी,
सर्दियों मे नींद आती भीनी-भीनी।
शत्रु आए तो खोल में छिप जाता,
धैर्य से हर संकट टल जाता।
आहट से हो जाता सावधान,
यही मेरी प्रबल बुद्धि का ज्ञान।
दांत नहीं फिर भी सब खाता,
फल-सब्जी-मांस मुझे है भाता।
कूर्म अवतार बने विष्णु प्यारे,
सागर मंथन में बने सहारे।

1. कछुआ पानी और जमीन दोनों में रहता है।
2. इसके शरीर पर सख्त खोल (कवच) होता है, जो इसे दुश्मनों से बचाता है।

© Ashish Panda

3. कछुआ नदी को साफ रखने में मदद करता है, क्योंकि यह गंदगी और सड़ने वाली चीजें खाता है।
4. कुछ कछुए केवल पौधे खाते हैं, जबकि कुछ मांस भी खाते हैं।

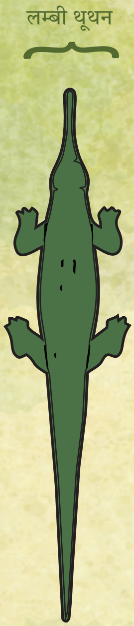
लम्बी थूथन

7. दुखी घड़ियाल की कहानी

नदियों को स्वच्छ बनाना है,
घड़ियाल को बचाना है।

दुखी पड़ा है घड़ियाल,
आंखे हो गयी है लाल।
भूख से है बेहाल,
पूछे कोई ना मेरा हाल।
पानी था मेरा जीवन प्यारा,
अब दिखे बस कचरा सारा।
रंग है मेरा हरा और भूरा,
जल में चलूं तो दिखूं अधूरा।
लम्बा थूथन घड़े का आकार,
मत करो मेरा अवैध शिकार।
नदी का प्रहरी कहलाता हूं,
जल जीवन को संतुलित बनाता हूं।

1. घड़ियाल का मुख्य भोजन मछलियाँ है।
2. घड़ियाल की पहचान उसकी लंबी और पतली थूथन (नाक) से होती है।

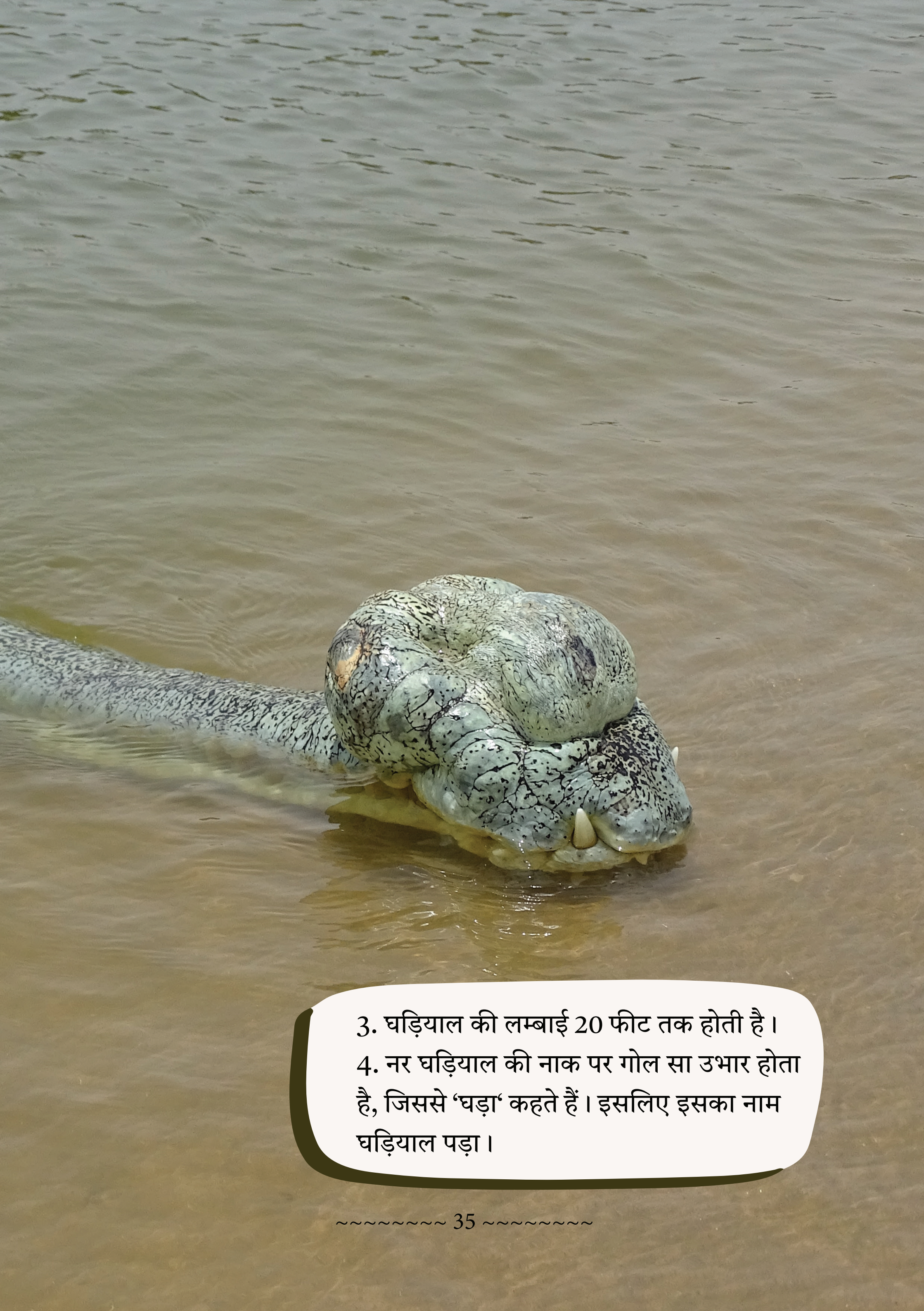

3. घड़ियाल की लम्बाई 20 फीट तक होती है।
4. नर घड़ियाल की नाक पर गोल सा उभार होता है, जिससे 'घड़ा' कहते हैं। इसलिए इसका नाम घड़ियाल पड़ा।

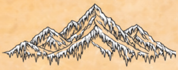

गंगा का उद्गम

(गंगोत्री ग्लेशियर, गौमुख)

↓

देवप्रयाग संगम

↓

बनारस घाट
(गंगा के मैदानी इलाके)

↓

बंगाल की खाड़ी
(गंगा का समापन)

8. गंगा मैया की पुकार

गंगा मां की है यही पुकार,
कूड़ा ना डालो बार-बार

निकलती हूं पर्वतों से,
नाम है मेरा गंगा मैया।
भगीरथ के तप से कही,
शिव की जटाओं से बही।
गोमुख से है शुरू मेरा सफर,
क्या तुम्हें है इस बात की खबर।
कभी पूजा और कभी स्नान,
यही है मेरी पवित्रता का मान।
मगर आज मैं दुखियारी हूँ,
कूड़े, प्लास्टिक से लाचारी हूँ।
मुझे न मानो बस एक धारा,
मेरे बिना सूना संसार सारा।

1. गंगा भारत की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है।

2. गंगा नदी का उद्गम स्थान उत्तराखंड राज्य के गंगोत्री ग्लेशियर से होता है।

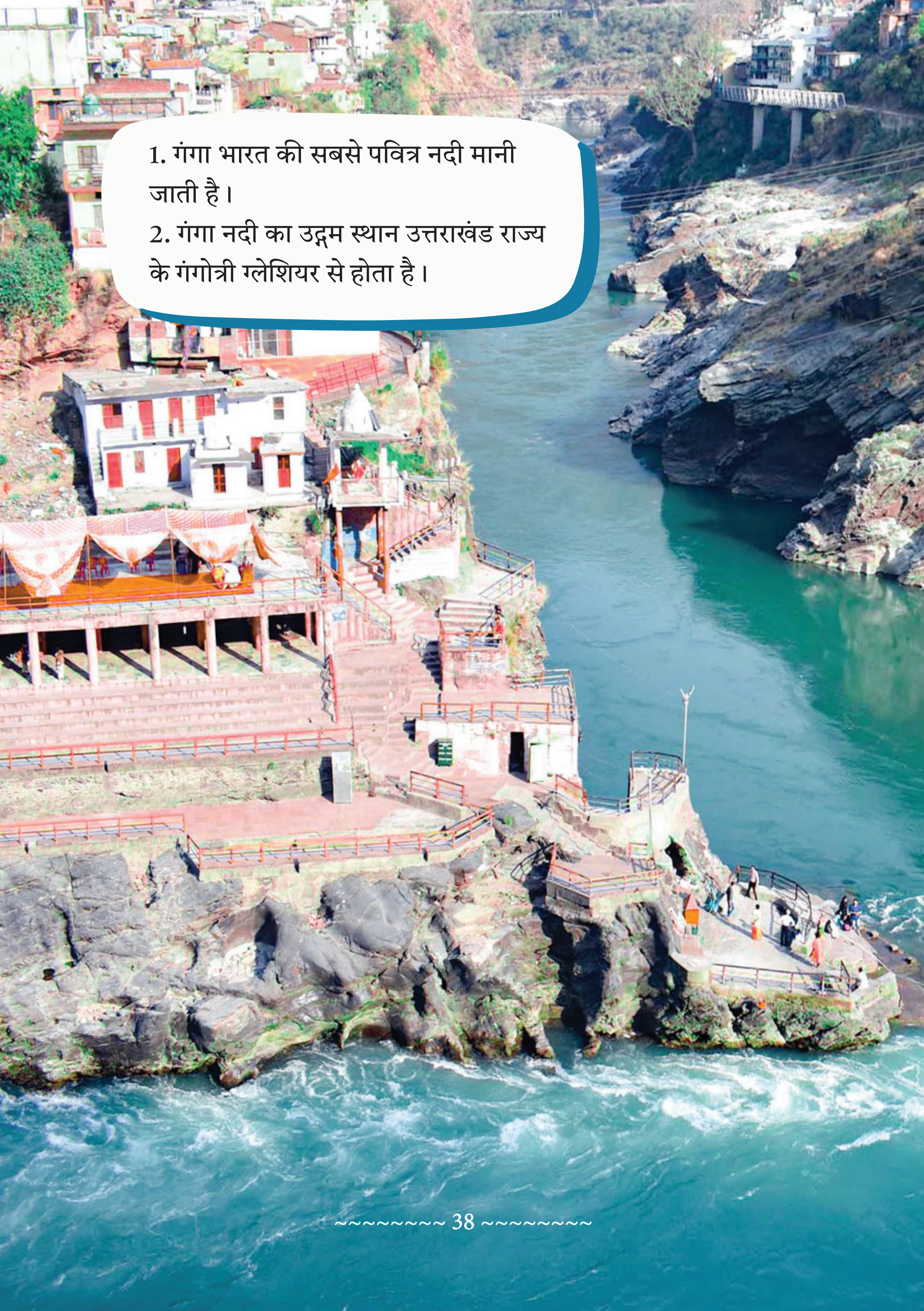

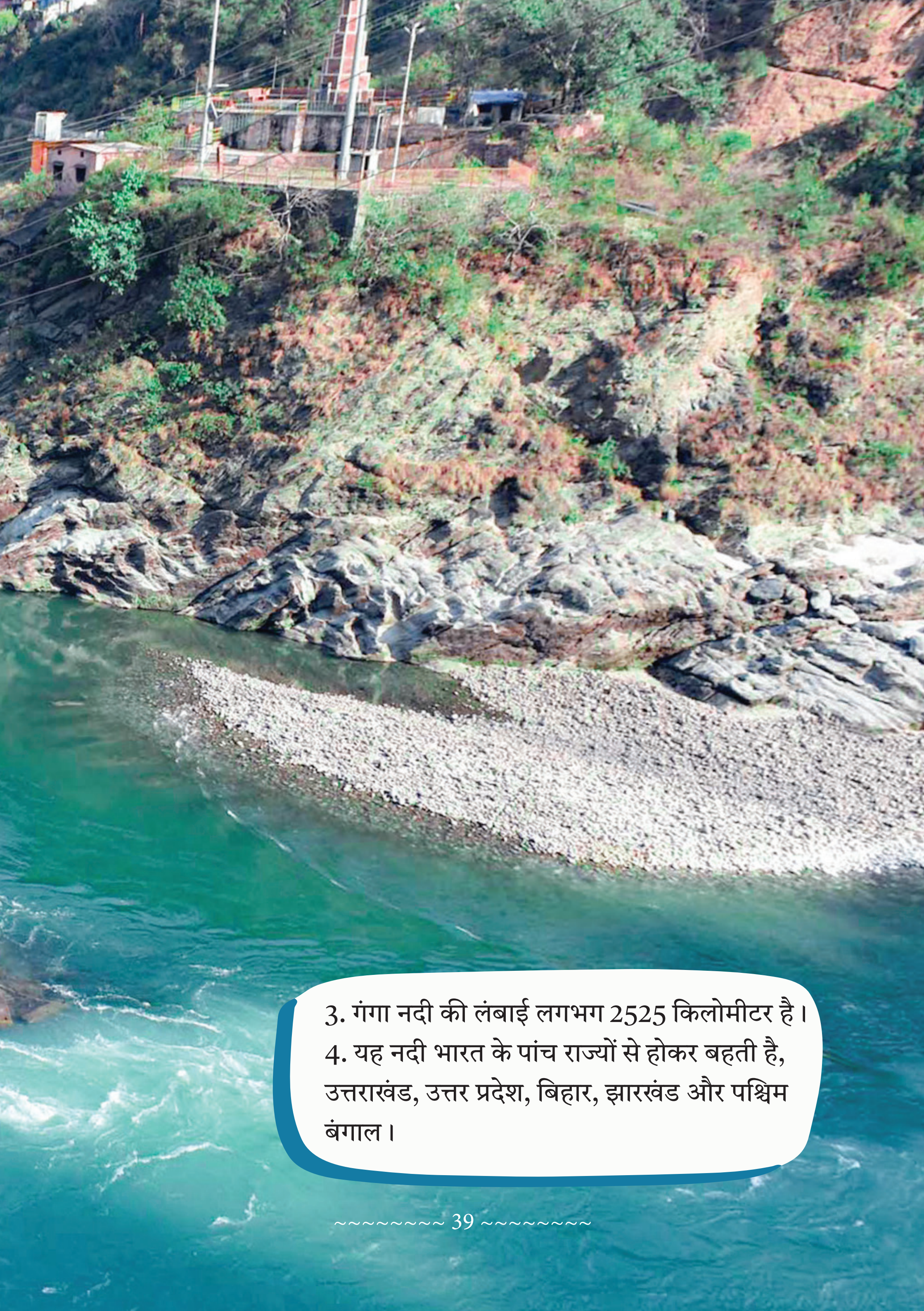

3. गंगा नदी की लंबाई लगभग 2525 किलोमीटर है।
4. यह नदी भारत के पांच राज्यों से होकर बहती है, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल।

एक जोड़े मे रहने
वाला पक्षी

9. सारस- प्रेम और प्रकृति का संदेश

प्यारे पक्षी की है पुकार,
दो संरक्षण, करो उपकार।

लंबी टाँगें, ऊँची गर्दन,
सफेद शरीर, लाल है कंठन।
जोड़े में रहता, प्रेम निभाता,
सच्चे प्रेम का पाठ सिखाता।
कीट-पतंगे खाकर ये आते,
किसानों के साथी बन जाते।
आद्रभूमि है इनका बसेरा,
प्रकृति संग है गहरा सवेरा।
कटते पेड़ और सूखते ताल,
बस यही है अब मेरा हाल।
प्रेम, संतुलन इनसे सीखो,
धरती माँ को फिर से सींचो।

1. सारस क्रेन दुनिया का सबसे लंबा, उड़ने वाला पक्षी है।

2. यह ज्यादातर नदी, तालाब और खेतों के किनारे रहता है।

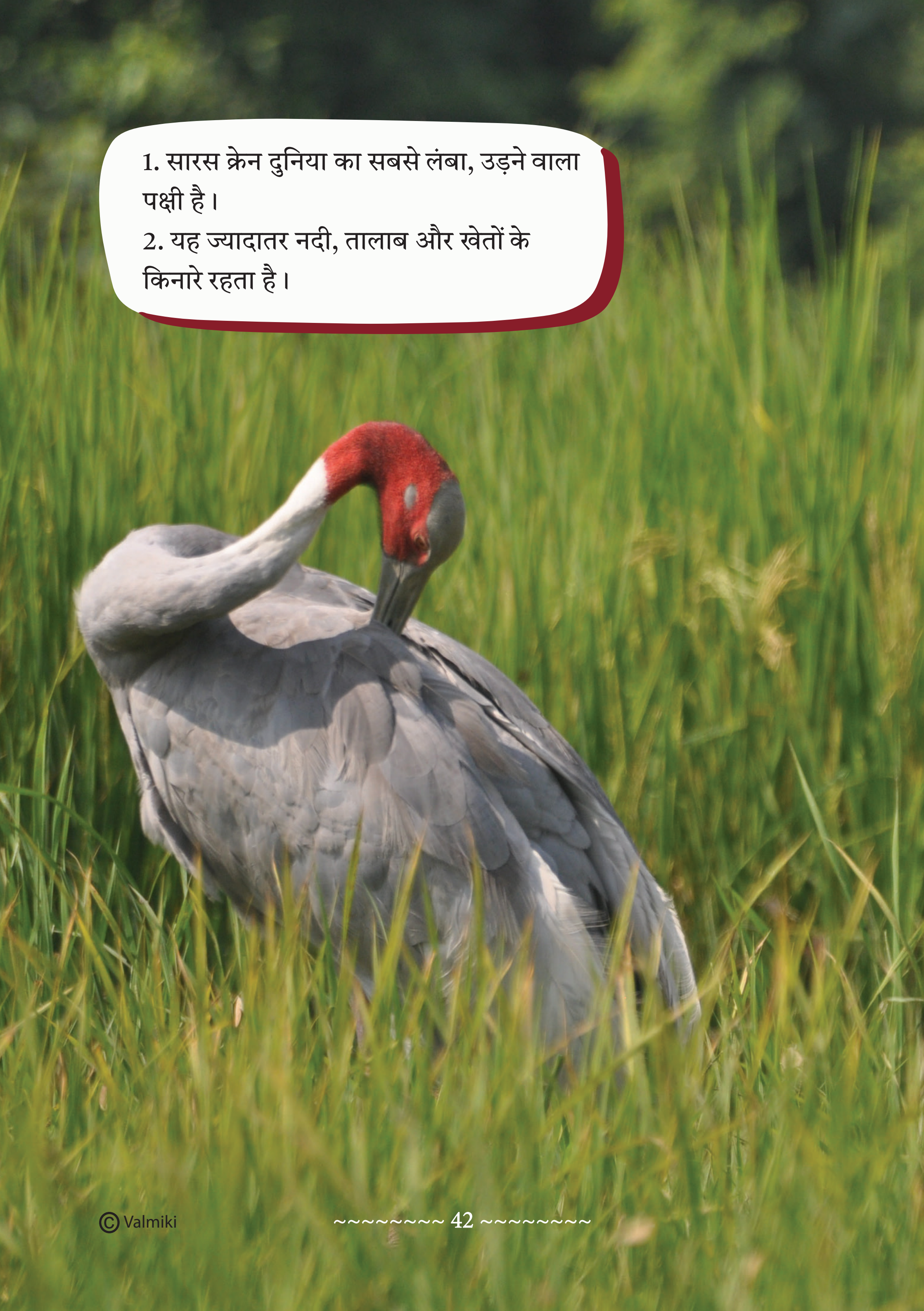

© Valmiki

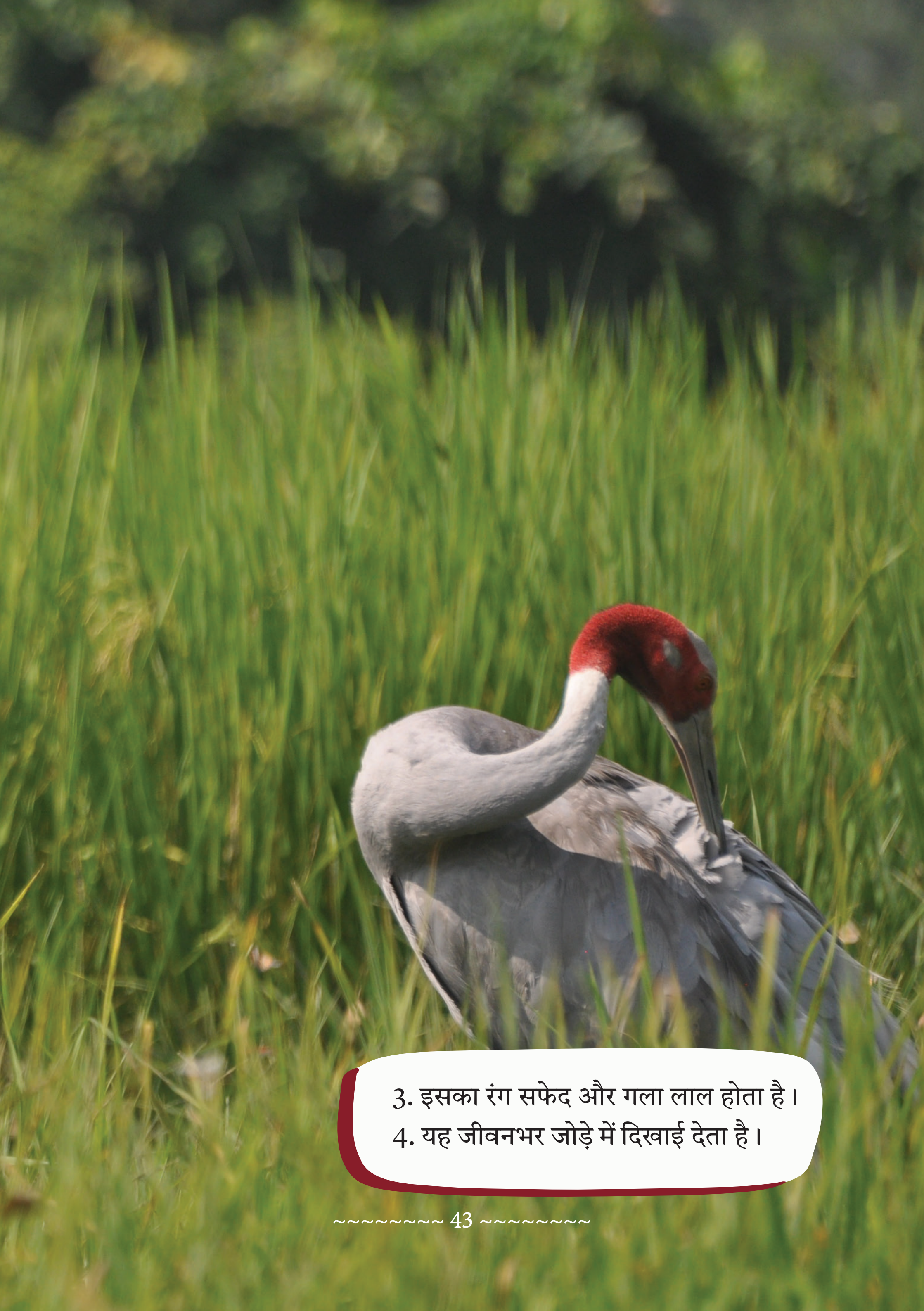

3. इसका रंग सफेद और गला लाल होता है।
4. यह जीवनभर जोड़े में दिखाई देता है।

वनों की
कटाई

औद्योगिक
वायु प्रदूषण

खतरनाक
रसायन

9. प्रकृति का दर्द

प्रदूषण पर करो प्रहार,
तभी होगा जीवन साकार।

हवाओं में है धुएँ का जोर,
हर दिन बढ़ रहा गाड़ियों का शोर।
फसलों में जब रासायनिक खाद मिलाया,
मिट्टी और इंसानों मे जहर फैलाया।
नदियों में बह रहा है कचरे का ढेर,
सम्भल लो अभी कहीं हो जाये ना देर।
प्रदूषण ने लिया है अब अलग ही मोड़,
कोई तो निकालो इससे बचने का तोड़।
पक्षी उड़ते, जानवर घबराते,
पटाखे जलाकर क्यों हो सताते।
कहाँ गए अब साफ नदियों के किनारे,
अब तो दिखते हैं कचरे के अम्बार सारे।

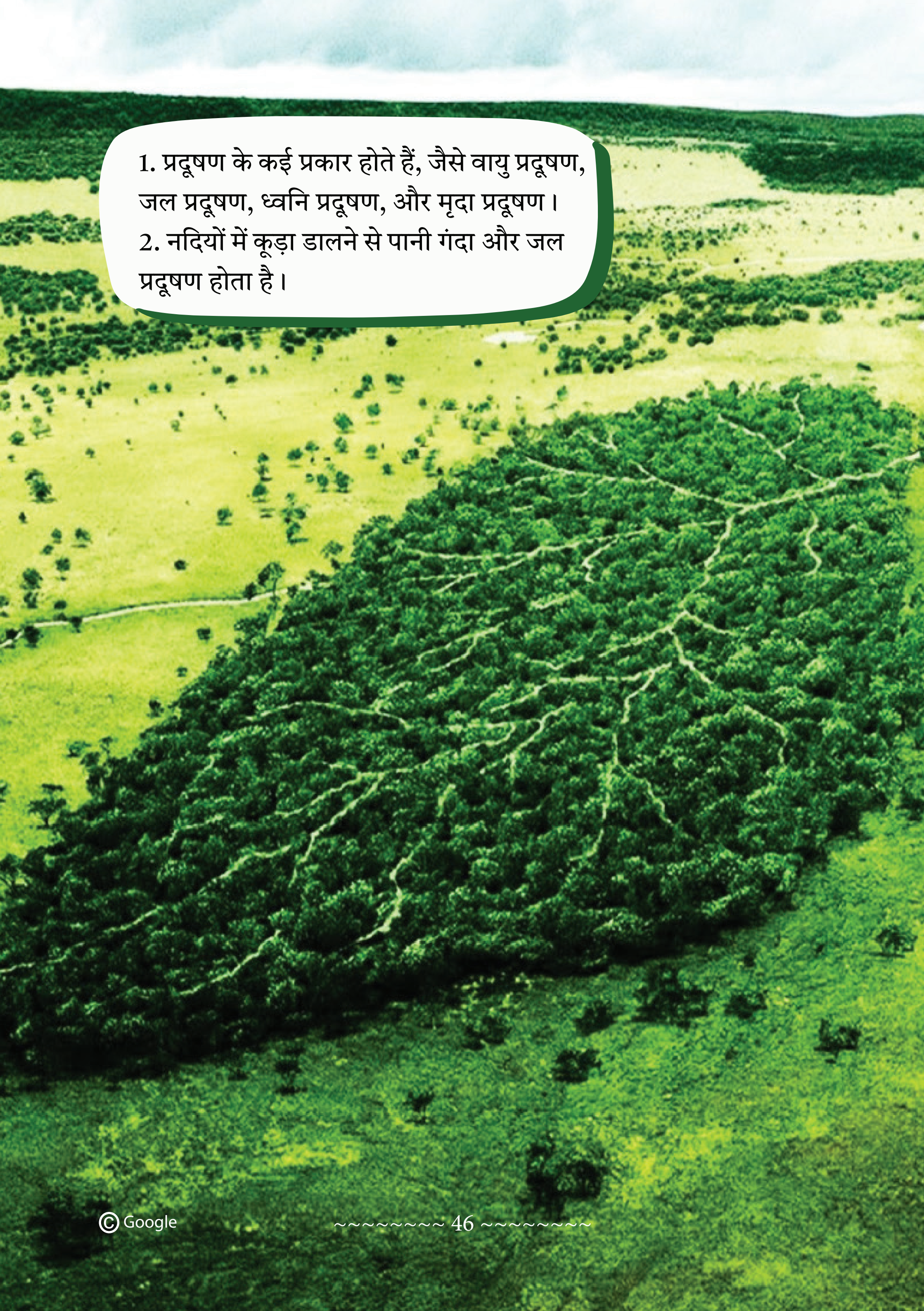

1. प्रदूषण के कई प्रकार होते हैं, जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, और मृदा प्रदूषण।
2. नदियों में कूड़ा डालने से पानी गंदा और जल प्रदूषण होता है।

© Google

3. तेज आवाजें जैसे हॉर्न या लाउडस्पीकर से ध्वनि प्रदूषण होता है।

4. हमें पेड़ लगाना चाहिए ताकि हवा साफ रहे।

गंगा के ऊदबिलाव की प्रजातियाँ

चिकने
आवरण वाला
ऊदबिलाव

एशियाई
ऊदबिलाव

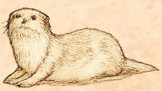

यूरेशियन
ऊदबिलाव

11. नदी का नन्हा रक्षक

ऊदबिलाव की मुस्कान,
स्वच्छ जल की है पहचान।

नदी किनारे उदबिलाव प्यारा,
जल में कूदे लगे बड़ा न्यारा।
कभी गोता लगाये, कभी कूदे,
नन्ही मछलियों को देखे आंखे मूंदे।
फुर्तीला, चंचल, नन्हा सा जीव,
नदी संतुलन की रखता है नीव।
नरम सा फर, आँखें चमकती,
नदी की हर लहर में खुशी दमकती।
वह चाहे साफ-स्वच्छ जलधारा,
फिर भी गंदी कर दी नदी-नाला।
आओ नदियों को साफ सुन्दर बनायें,
प्रकृति का ये अनमोल उपहार बचाएं।

1.ऊदबिलाव नदी और तालाब में रहने वाला जलीय जीव है।

2.शरीर लम्बा और पतला होता है और साथ ही जालीदार पैर पानी में तैरने में मदद करते है।

© Ganesh

3. इसके चमकदार फर (बाल) इसे ठंड से बचाते है।
4. इसका प्रिय भोजन छोटी मछलियाँ, झींगा और अन्य छोटे जलीय जीव हैं।

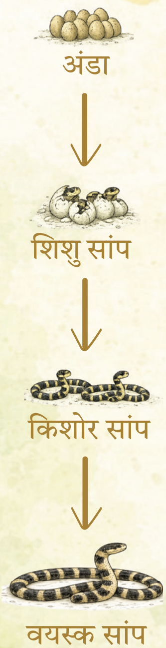
अंडा
शिशु सांप
किशोर सांप
वयस्क सांप

12. साँप- भ्रम, भय और सच्चाई

डर नहीं समझ दिखाओं,
साँप को बचाने के लिए कदम उठाओ।

सर-सर करके निकला साँप,
देख उसे सब बैठे कांप।
कभी नदी के किनारे बसेरा,
कभी होता छांव में सवेरा।
चूहे खाकर खेतों को बचाता,
किसानों का सच्चा मित्र कहलाता।
सदियों से इसको झूठी बातों ने घेरा,
सच को जानो, न फैलाओ अंधेरा।
न पीता है दूध, न ही है सुनता,
मानव इसी अंधविश्वास में है रहता।
सबको सिखाओ ये ज्ञान की बात,
डर से नहीं, समझ से बढ़े सौगात।

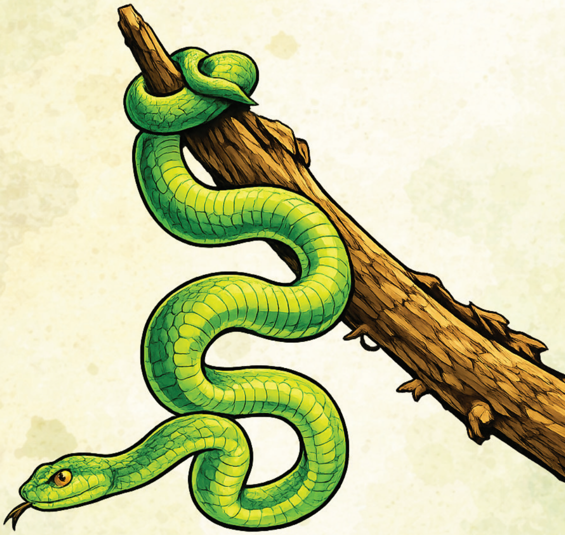

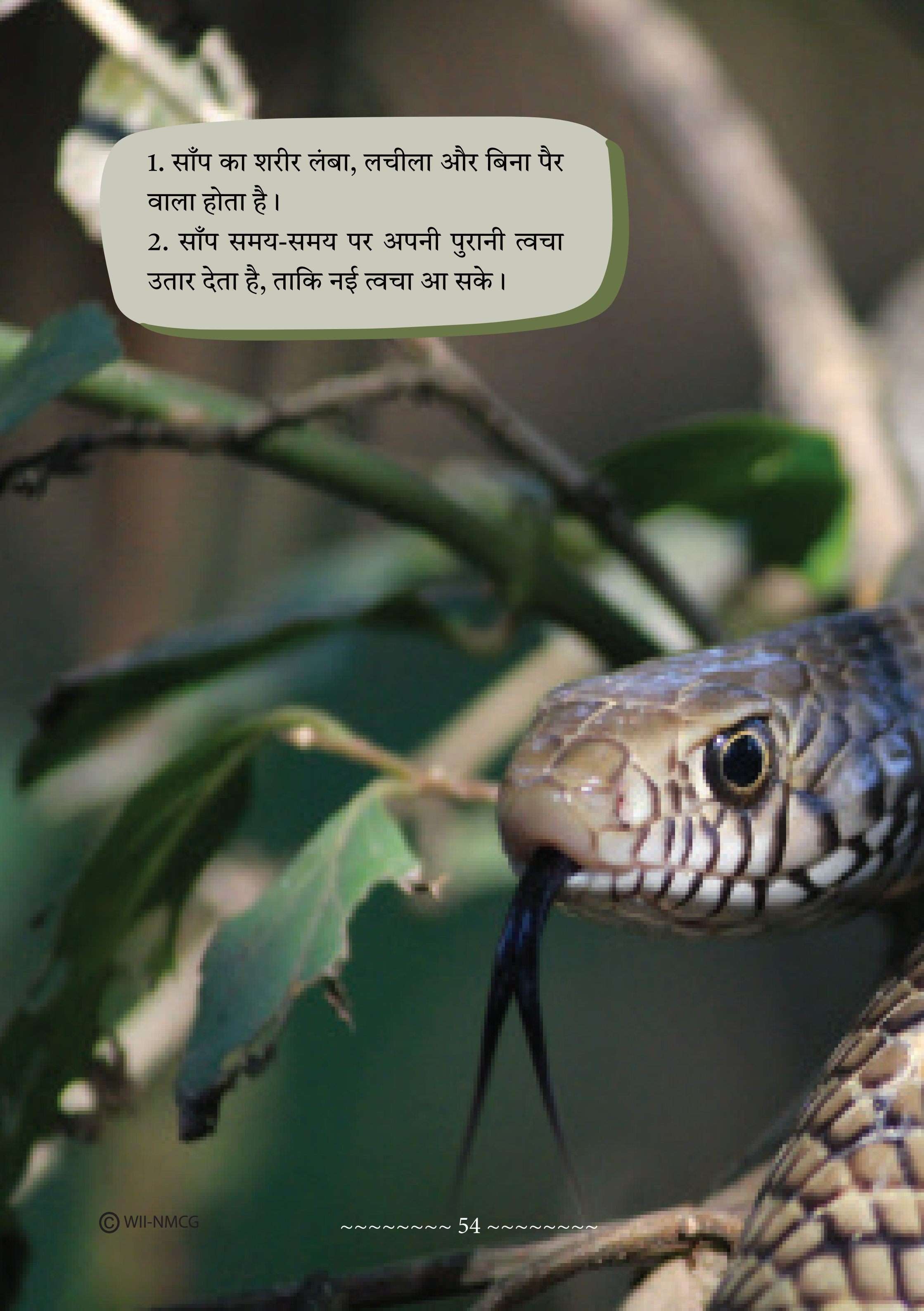

1. साँप का शरीर लंबा, लचीला और बिना पैर वाला होता है।

2. साँप समय-समय पर अपनी पुरानी त्वचा उतार देता है, ताकि नई त्वचा आ सके।

© WII-NMCG

3. साँप मांसाहारी होते हैं। ये चूहे, मेंढक, छिपकली, पक्षी और छोटे जानवरों को खाते हैं।
4. कुछ साँप विषैले और कुछ बिना जहर वाले होते है।

13. जंगल का राजा- शेर

शेर का जीवन बचाओ,
प्रकृति का संतुलन बढ़ाओ।

शिकार में माहिर, चाल में गुरूर,
जंगल में गूंजे मेरा ही सुरूर।
जंगल मे बजे मेरा ही बाजा,
नाम है मेरा शेर राजा।
दहाड़ से मेरी जंगल थर्रा जए,
रात हो या दिन कोई पास न आए।
सबको सिखाता साहस का पाठ,
सीख लो ये है बहुत पते की बात।
शिकार और लालच का वार,
बना दिया है जीवन बेकार।
वन कटेंगे तो मिटेगा संसार,
शेर रहे तो बचेगा जंगल अपार।

1. शेर जंगल का राजा कहलाता है।
2. शेर का शरीर बहुत मजबूत होता है।
3. यह मांसाहारी जानवर है।

© Google

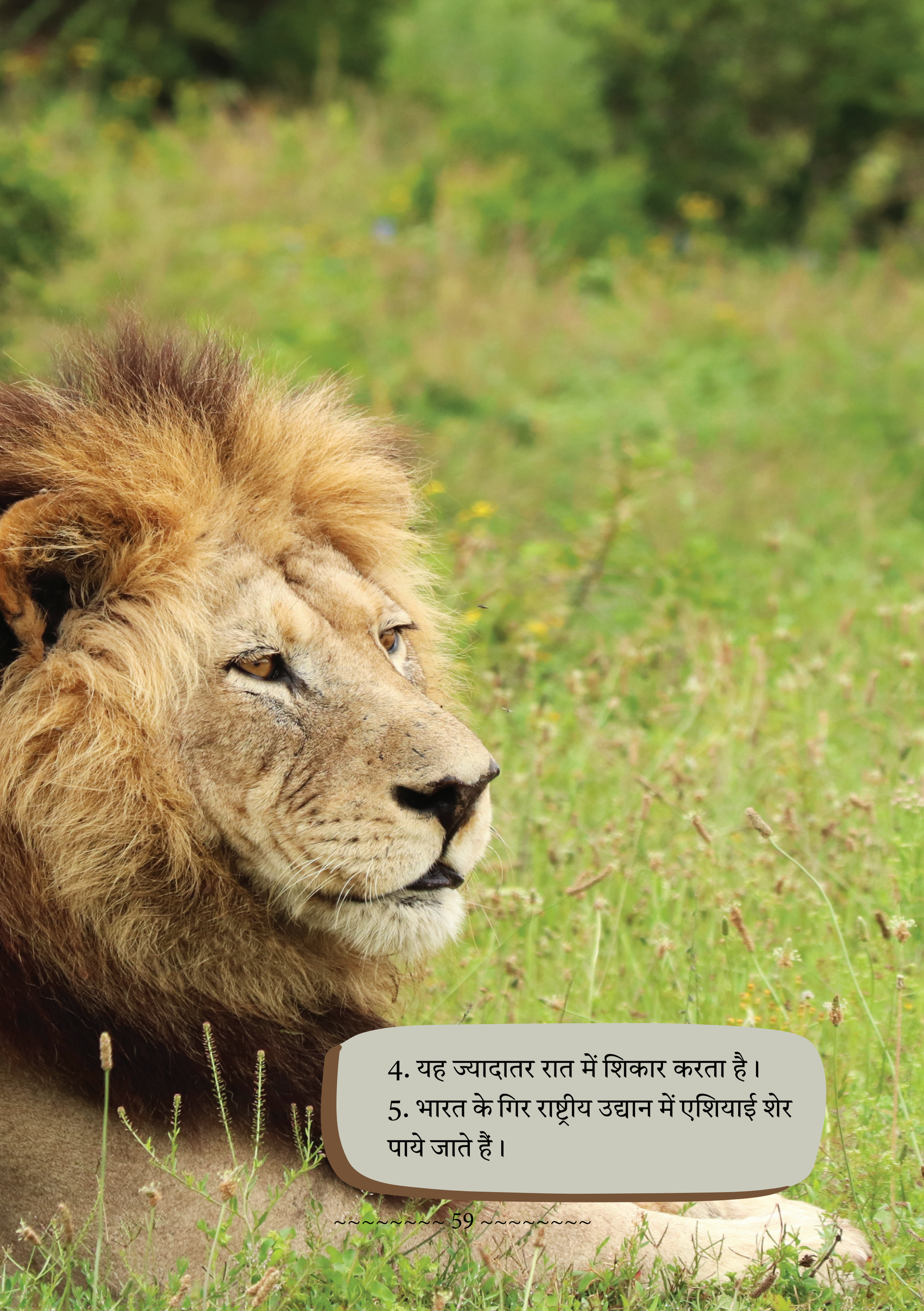

4. यह ज्यादातर रात में शिकार करता है।
5. भारत के गिर राष्ट्रीय उद्यान में एशियाई शेर पाये जाते हैं।

14. प्रकृति का साथी-हाथी

हाथी है जंगल की जान,
इसका करो सब सम्मान।

हाथी राजा बड़े बलवान,
ऊँचा कद, दिल से महान।
लंबा सूँड और बड़े है कान,
हाथी है जंगल की जान।
मोटी टांगे, भारी है चाल,
न डालो इनके लिए जाल।
सूँड से पत्तियों को गिराता,
जानवरों को ये खाना खिलाता।
हाथी रहे तो प्रकृति मुस्कुराए,
धरती पर हरियाली छाए।
न करो इनका शिकार,या अपमान,
हाथी बचे तो बचेगा जंगल जहान।

1. हाथी धरती का सबसे बड़ा स्थलीय जानवर है।
2. इसका शरीर बहुत विशाल और मजबूत होता है।

© WII-NMCG

3. हाथी की लंबी सूँड खाना खाने और पानी पीने के काम आती है।

4. यह शाकाहारी जानवर है। यह पेड़ की छाल, पत्ते और फल खाता है।

अण्डा
शिशु
मोरनी मादा/
मोर नर

15. रंग बिरंगा मोर

मोर है भारत की शान,
इसका संरक्षण है सबका काम।

आंगन में मेरे नाचा मोर,
मधुर ध्वनि से मचाता शोर।
भारत का है गौरव प्यारा,
राष्ट्रीय पक्षी, कहे जग सारा।
बगिया में जब मोर है आता,
हर बच्चे के मन को भाता।
मेघों संग जब ताल मिलाये,
धरती का श्रृंगार बढ़ाये।
नृत्य दिखाता, गीत सुनाता,
प्रकृति की सुन्दरता को बढ़ाता।
बीज फल और कीड़े खाता,
खेतों का रखवाला कहलाता।

1. मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है।
2. नर मोर के पास लंबी और चमकदार पूँछ होती है, जबकि मादा मोरनी के पंख छोटे होते हैं।

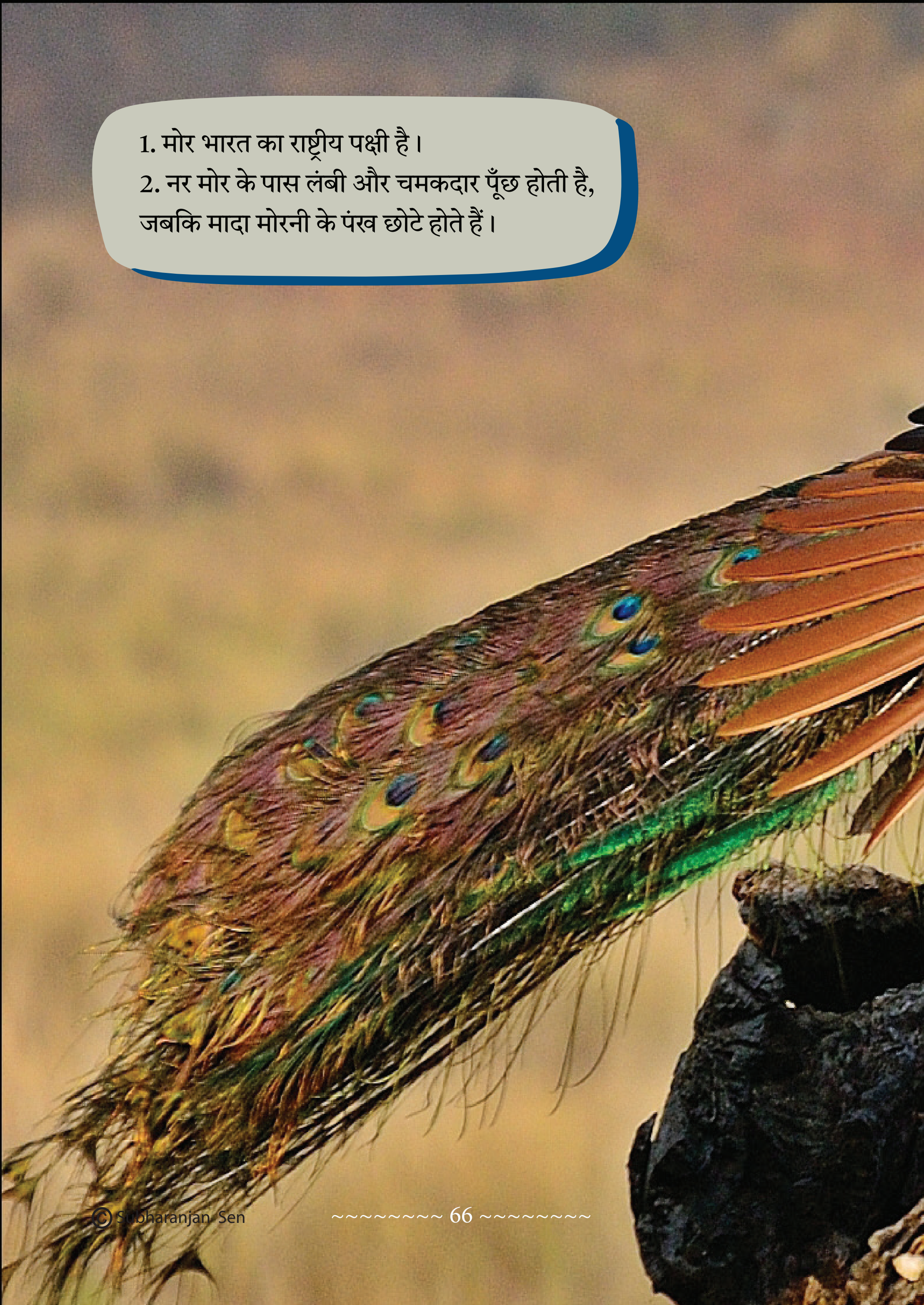

© Subharanjan Sen

3. यह कीड़े-मकोड़े, बीज, फल और छोटे जीव-जंतु खाता है।
4. भारत में मोर को सुंदरता और शांति का प्रतीक माना जाता है।

वार्षिक वलय

हर घेरा एक
नये साल के
विकास को
दर्शाता है।

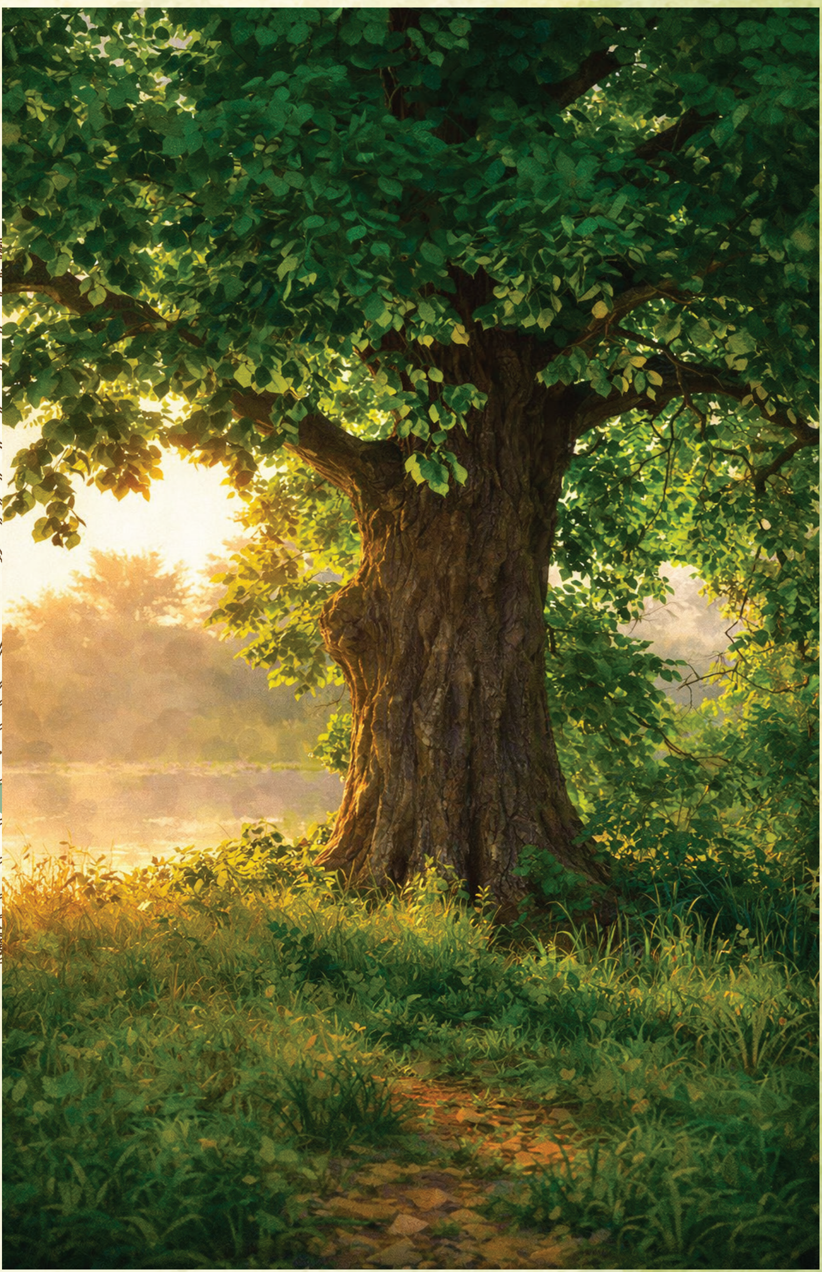

16. जीवन के साथी पेड़

हर रोज एक पेड़ लगाएँ,
अपना कल बेहतर बनायें।

पेड़ है धरती की शान,
रखना होगा इसका मान।
चिड़ियों का है प्यारा घर,
सभी को देते छाया दिनभर।
छाया, फल और शुद्ध हवा देता,
फिर भी पेड़ों को काटा जाता।
सारे पंछियों का था ये घर,
काट इन्हें कर दिया बेघर।
हर दिन जंगल काटे जाते,
चुप है क्या इसीलिए इन्हें सताते।
आओ मिलकर पेड़ लगायें,
पर्यावण को सुरक्षित बनायें।

1. पेड़ हमें हवा, भोजन, लकड़ी, दवा आदि देते हैं।
2. पेड़ों की जड़ें मिट्टी को पकड़कर रखती हैं, जिससे मिट्टी का कटाव नहीं होता है।

© Google

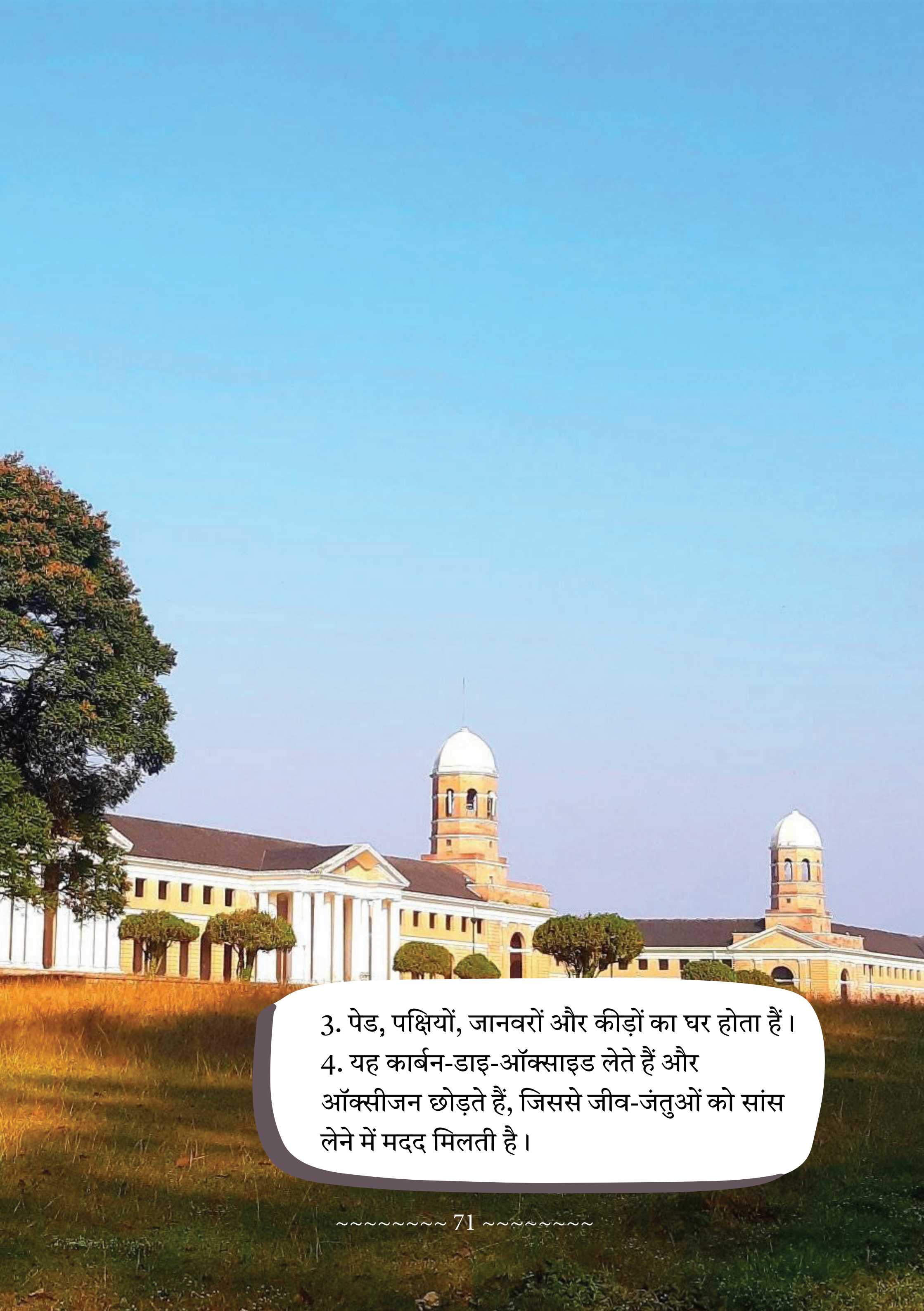

3. पेड, पक्षियों, जानवरों और कीड़ों का घर होता हैं।
4. यह कार्बन-डाइ-ऑक्साइड लेते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे जीव-जंतुओं को सांस लेने में मदद मिलती है।

Bal Ganga Prahari

17. बाल गंगा प्रहरी

जैवविविधता की रक्षा करेंगे,
बाल गंगा प्रहरी आगे बढ़ेंगे।

हम छोटे-छोटे बच्चे हम बाल गंगा प्रहरी
हैं मन के बड़े ही सच्चे हम बाल गंगा प्रहरी
नदियाँ, पेड़, पहाड, जंगल और हवा
इनके भी हैं दोस्त अच्छे हम बाल गंगा प्रहरी
नदियों को पहचानेंगे हम पेड़, पहाड़ को जानेंगे
पर्यावरण की बात करेंगें हम बाल गंगा प्रहरी
जैव विविधता को समझेंगे सबको भी समझायेंगे
जन जन को जागरूक करेंगे हम बाल गंगा प्रहरी
गंगा में ना हो प्रदुषण लोगों को समझायेंगे
जलीय जीवों का योगदान लोगों को बतायेगे
उनके संरक्षण की बात करेगें हम बाल गंगा प्रहरी
गांव शहर ही स्वच्छ नदियाँ अनवरत बहती रहे
कचरा प्रबंधन की बात करेंगे हम बाल गंगा प्रहरी
जंगल पर्यावरण सुरक्षित स्वच्छ हवा हो स्वच्छ हो पानी
खुद को भी साबित कर देंगे हम बाल गंगा प्रहरी

1. बाल गंगा प्रहरी भविष्य में अपने समाज में पर्यावरण संरक्षण के संदेशवाहक बनते हैं और दूसरों को भी प्रेरित करते हैं।
2. बाल गंगा प्रहरी कार्यक्रम, वन्यजीव संस्थान भारत द्वारा राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के अंतर्गत चलाया जा रहा है।

3. कार्यक्रम बच्चों में स्वच्छता, संरक्षण और सतत् जीवन शैली को अपनाने की भावना विकसित करता है।
4. चयनित विद्यालयों में 'गंगा जैव विविधता कॉर्नर' की स्थापना की जाती है।

सम्मान पत्र

यह सम्मान पत्र .... को पर्यावरण के क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये सराहनीय एंव प्रशंसनीय कार्यों हेतु प्रदान किया जाता है। आपकी सच्ची मेहनत एवं सीखने की ललक एक सच्चे 'इको-वॉरियर' (पर्यावरण योद्धा) की भावना को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

आप इस तथ्य को भली-भाँति समझते हैं कि हमारी नदियों को स्वच्छ एवं जीवित रखने के लिए हर बूंद, हर पौधा एवं हर जीव महत्वपूर्ण है। आपकी यह सकारात्मक भूमिका न केवल स्वयं तक सीमित रही, बल्कि दूसरों को भी 'माँ गंगा' की प्राकृतिक विरासत को सुरक्षित करने के लिए प्रेरणा देती रही है।

आपकी इस महत्वपूर्ण भागीदारी के लिए हम आपका हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

सौजन्य से

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

गंगा–जीवन का आधार

सुन लो भैय्या, सुन लो बहिना,
गंगा की जैवविविधता को संरक्षित रखना।
गंगा को स्वच्छ, निर्मल रखें ये जलचर,
कछुआ, ऊदविलाव, घड़ियाल, डॉल्फिन और मगर।
गंगा मैया की बहती रहे अविरल धारा,
इसे स्वच्छ रखने का हो, संकल्प।
गंगा की जैव विविधता सम्पदा है,
प्रकृति का वरदान,
इसे बनाये रखने में दें हम सब
अपना योगदान।
गंगा मैया बहती रहे अविरल,
हम सब मिलकर लें ये संकल्प।

आओ हम करें गंगा नदी का श्रृंगार, जैवविविधता और जलीय जीवों से प्यार।
गंगा की निर्मल धारा अविरल बहे, गर समुदाय की सहभागिता उसमें रहे।
गंगा जैवविविधता संरक्षण का हो नारा, स्वच्छ, निर्मल बनी रहे गंगा की धारा।
आओ मिलेकर करे गंगा का जीर्णोद्धार, जलीय जीवो का न समझे बेकार।
जलीय जीवों से करें प्यार, गंगा के हैं ये पहरेदार।
जैव विविधता संरक्षण में दे योगदान, बहती रहे गंगा निर्मल, अविरल महान।

गंगा की पुत्री डॉल्फिन की आत्मकथा

मैं हूँ एक डॉल्फ़िन। गंगा की डॉल्फ़िन, मेरा वैज्ञानिक नाम " प्लाटानिस्टा गैंगेटिका " है। लोग मुझे गंगा की पुत्री कहते हैं,क्योंकि मेरा जीवन उसकी धाराओं से जुड़ा है। उसका जल ही मेरा घर है, उसका बहाव ही मेरा आकाश। मैं जन्म से ही उसी की गोद में पली-बढ़ी हूँ।

मेरी दृष्टि बहुत कमज़ोर है, इसलिए मैं प्रतिध्वनि से अपने आस-पास की दुनिया देखती हूँ। मैं छोटी-बड़ी मछलियाँ और झींगे खाती हूँ। नदी की गहराइयों में शिकार खोजने के लिए अपनी आवाज़ की तरंगें छोड़ती हूँ और लौटती हुई गूँज से शिकार का पता लगाती हूँ। मैं आमतौर पर अकेली रहती हूँ या छोटे-छोटे समूहों में तैरती हूँ। लोग मुझे गंगा की पुत्री कहते हैं। शायद इसलिए कि मेरी साँसें उसी की गोद से जुड़ी हैं, मेरी हँसी उसकी धाराओं में गूँजती है, और मेरा जीवन उसी के आँचल में पला है। जब मेरी माँ गंगा अपनी ठंडी धाराओं में मुझे पहली बार बहाकर ले गई थी, तभी मैंने महसूस किया कि यह जल ही मेरा घर है, यही मेरा आसमान, यही मेरा संसार। मेरे पिता समुद्र हैं। मैंने उन्हें कभी पास से नहीं देखा, पर उनकी आहट हमेशा सुनी है।

जब गंगा माँ मुझे अपने जल से सहलाती हैं, तो वह कहती हैं "बेटी, कभी तो तुझमें इतनी ताक़त होगी कि तू बहते-बहते मेरे पति की विशाल बाहों तक पहुँच सकेगी।" मैं उस क्षण की कल्पना करती हूँ जब मैं समुद्र के असीम नीले विस्तार में उन्हें गले लगाऊँगी। मेरे भाई घड़ियाल और ऊदबिलाव हैं। घड़ियाल थोड़ा गम्भीर है, पर जब हम छोटे थे तो उसके लंबे थूथन से वह हमें डराता और फिर

मुस्कुराता। ऊदबिलाव तो शरारतों का बादशाह है कभी उलटता-पलटता, कभी बुलबुले बनाता, कभी हमें पकड़कर पानी में घुमाता। हम तीनों माँ की गोद में घंटों खेला करते और मेरी मौसियाँ? वे हैं गंगा की सहायक नदियाँ यमुना, गंडक, कोसी, गोमती। जब मैं उनके पास जाती, तो वे मुझे

ऐसे बुलातीं जैसे कोई मौसी अपने मायके से आई भांजी को प्यार करती है। यह सब सुनने में कितना सुंदर लगता है न? पर मेरी आत्मकथा सिर्फ़ इस आनंद की नहीं है। इसमें एक गहरी पीड़ा भी है, जो मुझे आज तक दुःख देती है। कभी वह समय भी था जब नदी किनारे का हर दिन बेहद साफ़ और उजला दिखता था। पानी इतना पारदर्शी था कि उसकी गहराइयों तक निगाह आसानी से उतर जाती। लहरों के बीच तैरती मछलियाँ रंगों की छोटी-छोटी दीपशिखाओं जैसी लगतीं, जो पानी को जीवंत बना देती थीं। ऊपर आसमान में पक्षियों की चहचहाहट उस दृश्य को और मधुर बना देती थी।

उस दौर में इंसान का व्यवहार भी अलग था। वह प्रकृति को बोझ नहीं, बल्कि अपने जीवन का साथी मानता था। नदी, मछलियाँ और पक्षी ये सब मिलकर जीवन की एक शांत और संतुलित तस्वीर गढ़ते थे। हर सुबह जैसे यह एहसास कराती कि दुनिया कितनी सुंदर और निर्मल हो सकती है। मनुष्य दूर किनारे पर रहते थे। वे हमें श्रद्धा से देखते, कभी हमारी पूजा करते, कभी हमारी छलाँग देखकर तालियाँ बजाते। पर धीरे-धीरे वही मनुष्य बदल गए।
सबसे पहले मैंने देखा कि गंगा माँ का जल गन्दा होने लगा। उसमें कुछ अजीब-सी गंध आने लगी। मछलियाँ घबराकर कहने लगीं "यह कैसा पानी है? इसमें साँस लेना कठिन हो गया है।" मैंने भी महसूस किया कि मेरी साँसें भारी हो रही हैं। यह प्रदूषण था कारखानों का कचरा, इंसानों का मल-मूत्र, पूजा के बाद फेंके गए फूल-मालाएँ और प्लास्टिक।

फिर मैंने जाल देखे। लोहे और नायलॉन के जाल, जिनमें मेरी सहेलियाँ मछलियाँ फँस जातीं और तड़प-तड़प कर मर जातीं। कभी मैं उन्हें छुड़ाने की कोशिश करती, पर कई बार खुद भी उलझ जाती। उस समय मुझे लगता जैसे मनुष्य मेरे संसार के हत्यारे बन गए हैं। बाँधों ने मेरी माँ की देह को टुकड़ों में बाँट दिया। पहले मैं गंगा में आज़ादी से तैर सकती थी, पर अब बाँधों ने मुझे रोक दिया। मेरी मौसियों की धाराएँ भी बँध गईं। मैं चाहकर भी उनसे मिलने नहीं जा पाती। मुझे लगता है जैसे मेरी माँ के शरीर को ज़ंजीरों में बाँध दिया गया हो।

सबसे दर्दनाक पल वह था जब मेरे छोटे बच्चे ने सांस लेने के लिए ऊपर छलाँग लगाई और पानी की सतह पर प्लास्टिक का बड़ा टुकड़ा उसके मुँह में चला गया। वह घुटता रहा और मेरी आँखों के सामने उसकी जान चली गई। उस दिन मैंने पहली बार गंगा माँ को रोते हुए महसूस किया। मैं अकेली होती जा रही हूँ। पहले जहाँ सैकड़ों डॉल्फ़िन मेरी सहेलियाँ थीं, अब गिने-चुने साथी ही बचे हैं। कभी-कभी कई दिनों तक मुझे अपने जैसा कोई नहीं दिखता। यह तन्हाई मुझे तोड़ देती है। मैं सोचती हूँ क्या सचमुच मैं विलुप्त हो जाऊँगी? क्या गंगा की गोद में से मेरी आवाज़ हमेशा के लिए खो जाएगी?

फिर भी मैं हार मानने वाली नहीं हूँ। मुझे याद है गंगा माँ की बात "बेटी, जीवन बहाव है। जब तक बहती रहोगी, बची रहोगी।" और मुझे यह भी दिखता है कि कुछ मनुष्य बदल रहे हैं। वे हमें बचाने की कोशिश कर रहे हैं। कहीं-कहीं गंगा को साफ़ किया जा रहा है, डॉल्फ़िन अभयारण्य बनाए जा रहे हैं, और लोग यह समझने लगे हैं कि अगर गंगा की पुत्री बची रही तो गंगा भी जीवित रहेगी। मैं आज इंसानों से सिर्फ़ इतना कहना चाहती हूँ "तुम्हारे बिना हम नहीं, और हमारे बिना तुम भी अधूरे हो। गंगा सिर्फ़ जल नहीं, वह जीवन है। अगर उसमें हम जीवित नहीं रह पाए, तो सोचो तुम्हारा अस्तित्व कैसे बचेगा? तुम जब गंगा में आस्था से डुबकी लगाते हो, तो याद रखना कि उसी गंगा में मैं साँस लेती हूँ। अगर तुम उसे गंदा करोगे, तो तुम्हारी आस्था भी गंदी हो जाएगी। मुझे मत मारो, मुझे जीने दो।

मुझे जीने दोगे तो गंगा साँस लेगी, और गंगा साँस लेगी तो पूरा भारत साँस लेगा।"

मेरी आत्मकथा यहीं समाप्त नहीं होती। यह तो बस एक पुकार है, एक संदेश है। मैं अब भी गंगा की धाराओं में तैर रही हूँ। कभी बनारस के घाटों के पास, कभी भागलपुर विक्रमशिला के जल में, कभी साहेबगंज की स्नेह में, कभी गढ़मुक्तेश्वर के किनारे। लोग मुझे देखकर हाथ जोड़ते हैं, मुस्कुराते हैं। उस क्षण मुझे लगता है कि अभी उम्मीद बाकी है।

मैं गंगा की पुत्री हूँ। गंगा की लहरों में मेरी हँसी गूँजती है, और समुद्र पिता से मिलने की मेरी लालसा अब भी जीवित है। अगर इंसान सचमुच मेरा दर्द समझ ले, तो वह दिन दूर नहीं जब मेरी छलाँगें फिर से गंगा के हर मोड़ पर गूँजेंगी और मेरी आत्मकथा दुख में नहीं, बल्कि उत्सव में पूरी होगी।

©अमन कुमार होली
गंगा प्रहरी तथा बाल गंगा प्रहरी मेंटर
साहिबगंज, झारखंड

लेखक के बारे में:

अमन कुमार होली (गंगा प्रहरी तथा बाल गंगा प्रहरी मेंटर), जिला साहिबगंज (झारखंड) के निवासी हैं। इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से हिंदी साहित्य में एम.ए. किया है और वर्तमान में पीएच.डी. शोधार्थी हैं। गंगा प्रहरी के रूप में इन्होंने भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून से जैव विविधता ट्रेनिंग प्राप्त की है। साहित्य पठन-पाठन और लेखन में विशेष रुचि रखते हैं।

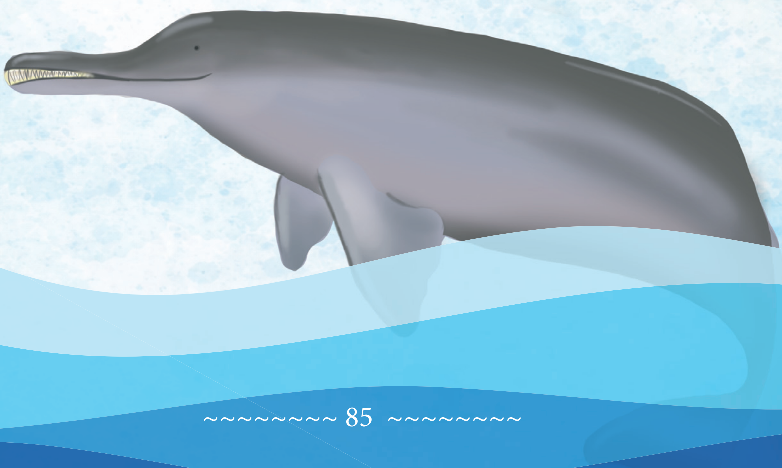

एन.एम.सी.जी.
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन,
जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा पुनर्जीवन विभाग,
जल शक्ति मंत्रालय,
मेजर ध्यानचंद स्टेडियम,
इंडिया गेट,
नई दिल्ली-110001

जी.ए.सी.एम.सी.
गंगा जलीय जीव संरक्षण अनुश्रवण केंद्र,
भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून

भारतीय वन्यजीव संस्थान
चंद्रबनी,
देहरादून – 248001
उत्तराखंड, भारत

नमामि गंगे

Bal Ganga Prahari

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

Government of India
Ministry of Jal Shakti
Department of Water Resources,
River Development & Ganga Rejuvenation